# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

## मुहावरे

लोकोक्ति और मुहावरा में वही भेद है, जो रूप की दृष्टि से वाक्य और खण्डवाक्य में होता है। प्रयुक्त होने पर लोकोक्ति के रूप, काल, वचन, पुरुष आदि में कोई परिवर्तन नहीं होता, किन्तु मुहावरे में हो जाता है। जैसे - ''चाहे सैंया घर रहे, चाहे रहे विदेश'' (कहावत)। इनका प्रसंगात कहीं भी, किसी भी अवसर पर अपनी भावनाओं या मतों की पुष्टि में सीधा प्रयोग किया जा सकता है; लेकिन मुहावरे को बिना वाक्य में ढाले उसका अर्थ स्पष्ट नहीं होता, जैसे - ''फूलल''। इसका प्रयोग कई रूपों में हो सकता है, यथा - 'बड़ा फूलल बाड़े' (अर्थात् बहुत गुस्से में हैं, यहाँ प्रशंसा सुनकर सीना फुलाना भी अर्थ हो सकता है), 'डूमरी के फूल होखल' (अर्थात् दुर्लभ होना, बहुत दिन के बाद दिखाई पड़ना), 'नदी फुलाइल बा' (अर्थात् नदी में बाढ़ आया है), 'फूला बुतावल' (श्मशान में जले हुए शव के स्थान पर एक कर्मकाण्डीय विधान), 'फूल के डुम्भा होखल' (कुपित होना), इत्यादि। उपयोगिता की दृष्टि से मुहावरों का काम वाक्य में अर्थ चमत्कार उत्पन्न कर साधारण वाक्य को भी सशक्त, समृद्ध और ओजपूर्ण बनाना है। लक्षणा और व्यंजना पर अवलम्बित मुहावरे किसी एक अलंकार में सीमित न रहकर तमाम तरह के अलंकारों की ध्वनि व्यंजित करते हैं। प्रस्तुत से अप्रस्तुत का निदर्शन मुहावरों की अपनी एक खास विशेषता है।

१. अँतड़ी छरहर कइल - उपवास, पेट सोन्हावल

२. अँतड़ी दुहाइल - काफी श्रम

३. अंकवार लिहल - गले मिलना

४. अंगुरियावल - बार-बार उत्प्रेरित करना (अनावश्यक)

५. अंगुरी उठावल - शान के खिलाफ, विरोध

६. अंगुरी चिबावल - अफसोस करना

७. अंगुरी देखावल - दबदबा कायम करना

८. अंगुरी पर गिनल - गिने-चुने

९. अंगुरी भोंकल - दगा देना

१०. अंगुरी रंगल - नखड़ा पर पालिश

११. अकल के कोल्हू - मूर्ख, मोट बुद्धि वाला

१२. अकिल गायब होखल - बुद्धि काम न करना।

१३. अकिला फुआ - खुद ज्ञान न होना, दूसरे को बुद्धि देना

१४. अकेला घर छकेला मारल - उछाह एवं चिन्ता-रहित आनन्द

१५. अखर गइल - (पचास रूपया देवे के परल, अखर गइल)

१६. अगिया बैताल - क्रोध में पागल

१७. अछरंग लगावल - दोषारोपण

१८. अड़ियल ट्टटू - जड़, जिद्दी, जो बात न माने, विवेकहीन

१९. अथा माई के कथा कहल - निरर्थक बतकही

२०. अनका जूंजी मूतल - दूसरे के बल पर कूदना

२१. अनचलावल - बिना बुलाए

२२. अनबोलता काना - चुप्पा, जानबूझ कर न बोलन वाला

२३. अनूना देह में नून रगरल - निर्दोष को दोषी बताना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

२४. अन्त ना पावल - असलियत का पता न लग पाना (इनकर अनत भगवानों ना पइहें )

२५. अन्नखाती - कम खाने वाला, खाने से टालमटोल करने वाला

२६. अन्हार घर के दीया - कुलभूषण, आदर्श गृहिणी, श्रेष्ठ संतान

२७. अन्हार होखल - कमजोरी, शक्तिक्षीणता

२८. अन्हारी काजर कइल - असंभव को सम्भव करना

२९. अपना राधा के याद कइल - अनुराग

३०. अबर पर जबर - एक से एकाल

३१. अमरख लागल - दुःख लगना (पइसा में छेद होखल)

३२. अरकछ बथुआ - खराब चीज

३३. अलखराज - निफिक्र, मस्त

३४. आँख आइल - दृष्टि दोष

३५. आँख उठावल - खिलाफत

३६. आँख के किरकिरी - कष्टकारक, शत्रुता

३७. आँख के पानी गिरल - निर्लज्जता

३८. आँख तरेरल - क्रोध

३९. आँख देखावल - आतंक

४०. आँख ना ठहरल - विस्मय (कोई सुन्दर, अनुपम चीज देखने पर)

४१. आँख मूनल - महटियावल, इशारा कइल

४२. आँख लगल - निद्रा

४३. आँख से करेज बहल - घोर दुःख, (गलि-गलि बहेला करेजवा, अँखियन कोर), गहरी चोट

४४. आँखी में चनरमा लगावल- दृष्टि प्राप्त करना, आँख फाड़ कर देखना

४५. आँगन घर कईल - घरेलू कार्य

४६. आइ आम चाहे जाइ लबेदा - चाहे जो हो

४७. आइना में मुँह देखल - स्वयं को पहचानना, अपनी स्थिति को बोध करना

४८. आकास छानल - व्यर्थ का कार्य

४९. आकास में उड़ल - कल्पना में विचरण, अलभ्य के लिए परिश्रम, मनसूबा बांधना

५०. आकास में दिया बारल - निष्फल कार्य, व्यर्थ काम

५१. आग लगा के तापल - दुष्टता में प्रसन्नता, विनाश करने में खुशी

५२. आगी-पानी होखल - व्यग्र, बेचैन

५३. आगे के जामल - अबोध

५४. आटा दाल के भाव मालूम होखल - कष्ट में यथार्थ का बोध

५५. आठे-काठे ना लागल - सहयोग न करना, समीप न आना

५६. आन पर कान कटावल- बात पर डटे रहना

५७. आन्हा थोपी खेलावल - परेशान करना (एक प्रकार का खेली भी)

५८. आलू पर माटी चढ़ावल - समय बर्बाद करना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

५९. आवाँ में नाद भुलाइल - स्पष्ट चीज भी न देख पाना

६०. इ कढ़ावेली त उ घोंटावेली - हाँ में हाँ मिलाना

६१. इनरा-पोखरा धइल - डूब मरना

६२. इमीली घोंटावल - कन्या विवाह के समय मामा द्वारा किया गया विधान

६३. ईंटा जोरिया के बराबर होखल - खींच-खाच बरोबरी, समकक्ष होने की चेष्टा

६४. उच्च लिलार - भाग्यशाली

६५. उड़ान हरल - प्रगति में बिघ्न डालना

६६. उदबेग लगावल - बेचैन करना

६७. उमिर छलकल - जवानी चढ़ना

६८. ऊचिरइया उड़ गइल - जमाना बदल गया, लद गया

६९. ऊँच सुनल - कम सुनना

७०. ऊँच-खाल गोड़ रखल - समझ-बूझकर काम न करना

७१. ऊँची छुवल - बेमन के काम

७२. ए कोठी के धान ओ कोठी कइल - व्यर्थ का काम, समय बर्बाद करना

७३. एक पइसा भी - तनिक भी (संदेह न होना)

७४. एक बोलावे चौदह धावे -

७५. एक लकड़िया बाजा - मृतक के साथ जाने वाला बाजा, (शंख, घरी-घंट)

७६. एक हाथ के जीभ बढ़ावल - ज्यादे लालच करना

७७. एके लाठी से सबके हाँकल - सबको एक ही जैसा समझना

७८. एगो कौओ से भेंट ना - निर्जन

७९. एगो में दू गो जोरल - बात को बढ़ाना

८०. एड़ी अलगावल - बराबरी करना

८१. ओझाई कइल - किसी समस्या के समाधान हेतु गंभीर कोशिश

८२. ओठ खुलल - विस्मय

८३. ओठ चाटल - प्यास लगना, मुँह में पानी आना

८४. ओठ दबावल - गुस्सा

८५. ओठ निकलल - निराशा

८६. ओठ पर फेंफरी - उदासी

८७. ओठ फुटल - दुःख लगना

८८. ओठ बावल - अवाक्

८९. ओठ सटल - खामोशी, भूख-प्यास लगना

९०. ओठ हिलल - क्रोध

९१. ओल निकियावल - फिजूल कार्य

९२. केंटिया सोन्हावल - बदले की भावना

९३. केंठी टूटल - धर्म का नाश, संकल्प टूटना, मछरी खइला से साधु बाबा के केंठी टूट गइल

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

९४. कउआ हँकनी बनावल - बेचैन किये रहना, इज्जत न देना

९५. कतराइल - बचना, पिण्ड छुड़ाना, मुँह मोड़ना

९६. कतल काटल - इज्जत उतारना, प्रतिष्ठा गिराना

९७. कनकट भइल - नियंत्रण में न होना

९८. कनकट्टा - स्वतंत्र, जो अपने में किसी को न लगावे

९९. कनैठी - कान ऐंठना, सचेत करना

१००. कपार धूनल - सिर पिटना

१०१. कपार पर के लाठी - विपत्त

१०२. कपार पर चढ़ल - मन बढ़ना

१०३. कपारे हाथे - चिंता

१०४. करजोरी - प्रार्थना

१०५. करम के दमाद - काम कम, दिखावा अधिक

१०६. करम फूटल - दुर्भाग्यशालिता

१०७. करम में आग लागल- विपत्ति, अभाग्य

१०८. करम में लेंढ़ा लिखाइल - दुर्भाग्यशालिता की हद

१०९. करीखही हाँड़ी से मारल - बेशर्म, बदचलन व्यक्ति का मान-मर्दन करना

११०. करेजा काढ़ के देहल - दिल खोलकर मदद करना

१११. करेजा खंखोरल - भावनाओं का बेरहमी से दोहन

११२. करेजा फाटल - अतिशय दुःखी होना

११३. करेजा में लगल - दुःख होना, किसी बात की चोट लगना

११४. कवन मुँह लेके जाएब - ऐसा काम जिसके प्रत्यक्ष होने पर शर्म लगे

११५. कसाई के कुत्ता - लालची पिछलग्गू

११६. काँची काढ़ल- पीटना, मारना

११७. काँचे नींद - पहली नीद

११८. काँन फूँकल - चेला बनाना

११९. कांची निकालल - आहिन करना, कूटना, पीटना

१२०. काजर से आँख भारी - सुकुवार

१२१. काठ मारल - होश गुम होना

१२२. कान उँखाड़ल - गलत रास्ते से बचाना

१२३. कान काट के काढ़ल - बंधुआ बनाना

१२४. कान काटल - मात करना

१२५. कान खोल के सुनल - सावधान होकर सुनना

१२६. कान छुवल - सतर्क होना

१२७. कान छेदल - स्वाधीन बनना

१२८. कान दूसरे जगह रखल - ध्यान न देना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

१२९. कान देहल - ध्यान देना

१३०. कान धइल - भूल स्वीकार करना

१३१. कान ना कइल - ध्यान न देना

१३२. कान में अंगुरी लगावल - ध्यान हटाना

१३३. कान में तेल डाल के सुतल - बेफिक्र

१३४. काना-फूसी - गुप्त वार्ता

१३५. कानी बिलाई होखल - घास में छिपा साँप, ऊपर सीधा भीतर कपट

१३६. कानोकान - बिल्कुल गोपनीय

१३७. कान्ह देहल - सहयोग करना

१३८. कान्ह लगावल - सहारा देना

१३९. कान्हा भइंसा - मनबढ़ू

१४०. काम चोखा भइल - कार्यसिद्धि

१४१. काल आइल - मृत्यु का समीप होना

१४२. काल निअराइल - मार खाने खाने वाला काम करना (तहार काल निअराइल बा)

१४३. काशी के फिरता - चालबाज

१४४. किचाइन कइल - छिछालेदर, नष्ट-भ्रष्ट, अस्त-व्यस्त करना

१४५. कुइयाँ उड़ाहल - उछाल, खुशी, कुँएं का पानी बाहर निकलना

१४६. कुकुर के मोल - कोई गणना नहीं, महत्वहीन, कोई मूल्य नहीं

१४७. कुकुर के सेना - जिसका खाय उसका गावे

१४८. कुकुर बिलार के जमघट - निकम्मे, गुणहीन लोगों की भीड़

१४९. कुछ खा के सुत जइतीं - दुःख के कारण मृत्युवरण की इच्छा

१५०. कुर्सी तोड़ल - कुछ काम न करना, बैठे रहना

१५१. कुहुक के रह गइल - दुःख प्रकट न करना

१५२. कृत उतारल - प्रतिष्ठा का हनन करना, निम्न स्तर पर उतरना

१५३. केराव लेखा सुरका टांगल - अफशोस करना

१५४. कोख उठल- भरपेट खाइल

१५५. कोख के बिहुन - निःसंतान

१५६. कोख धसल - प्रचण्ड भूख की स्थिति

१५७. कोख बइठल - वृद्ध होना

१५८. कोख भारी होखल - गर्भवती होना

१५९. कोल्हू के बैल होखल - दिन रात खटने वाला

१६०. कौआ कान ले गइल - आत्मचिन्तन न करना

१६१. कौड़ी के तीन होखल - कहीं का न होना, मूल्यहीन होना

१६२. कौड़ी में कसीदा - छोटा कार्य किन्तु अनावश्यक विस्तार

१६३. कौतुक उतारल - मजाक उड़ाना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

१६४. खइला पर राखल - सिर्फ भोजन पर नौकर रखना

१६५. खइलो पर आफत - खाने पीने की भी तकलीफ

१६६. खट के आइल - परिश्रम करके आना

१६७. खदार होखल - मुखिया बनना

१६८. खर जिउतिया कइल - संतान की भलाई के लिए माता द्वारा किया गया कठिन तप

१६९. खरकटल छोड़ावल - ऐंठन दूर करना

१७०. खलरा खींचल - ठीक से पीटना

१७१. खसमें खेती - दूसरे के भरोसे

१७२. खांच भरल - भोजन करना (उलाहना में)

१७३. खाई-बेलाई लागल - चैन नहीं

१७४. खाल खींचल - पीटना

१७५. खिलाड़ी होखल - चालाक बनना

१७६. खुरी काटल - बेचैन होना

१७७. खुले हाथ - उदारतापूर्वक, घर लुटाई

१७८. खूंद बान्हल - हाबडीब, पाखण्ड करना

१७९. खेंखर बिलार के दशा - दयनीय दशा

१८०. खेखर-बिलार के दशा - बदतर स्थिति

१८१. खेत उठल - खेत का फसल काट लिया जाना, खेत खाली हो जाना

१८२. खेत-पेट बराबर - खा-पी बराबर, बचत नहीं

१८३. खेप लागल - हल्का बोझ, फिर भी थक जाना, बैठ जाना

१८४. खेल कइल - मजाक करना, तमाशा खड़ा करना

१८५. खेल खेलावल - परेशान करना

१८६. खेलवाड़ कइल - मजाक करना

१८७. खैर ना होखल - बचने का उपाय नहीं

१८८. खोपचारा मारल - मन बढ़ू का मन ठीक करना, ऐसी बात कहना जिससे दुःख लगे

१८९. गंगा नहाइल - किसी विघ्न से मुक्ति

१९०. गंगा हेलल - झूठ पर पर्दा डालना

१९१. गंगा होखल - उदार

१९२. गठरकट्टा - उधरिया, पॉकेटमार

१९३. गतान भिंगावल - मजा मारना

१९४. गतान होखल - थक कर चूर

१९५. गदरन अइंठल - अहित करना

१९६. गदरनिया पास - गर्दन में हाथ लगाकर बाहर करना

१९७. गदह पचीसी - मूर्खता

१९८. गदहा के जनम छूटल - जिदंगी में पहली बार किसी विशिष्ट चीज की प्राप्ति

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

१९९. गर के केंठी - झंझट का काम (अनावश्यक बंधन)

२००. गर के घंटा - जी का जंजाल

२०१. गर के ढ़ोल - बिना लाभ के किसी की प्रशंसा या भक्ति

२०२. गर के माला - ऐसा चीज, जिसे न चाहते हुए भी अपनाना या ढोना पड़े

२०३. गर के मुअड़ी - परेशानी में डालने वाला काम या सामान

२०४. गर पकड़ल - पीछा न छोड़ना

२०५. गरदन के ढोल - झंझट, परेशानी

२०६. गरदन के भइल - प्रिय होना

२०७. गरदन मोट होखल - दौलतमंद, घमण्डी

२०८. गरदनिआवल - गर्दन में हाथ लगाकर बाहर करना

२०९. गरदा झारल - मन का एठन छुड़ाना

२१०. गरे बान्हल - गले में भोजन का अंटकाना, थोड़े में संतोष

२११. गर्दन काटल - सतावल

२१२. गाँठ पारल - प्रतिज्ञा, कसम

२१३. गाँठ बान्हल - प्रतिज्ञा करना, संकल्प

२१४. गाभी फेंकल - व्यंग्य करना

२१५. गाय के भइंसी में, भइंसी के गाय में - घालमेल

२१६. गाय लीलल - कसम खाना

२१७. गाल फुलावल - रूठना

२१८. गाल बजावल - ढोंग रचना, पाखण्ड करना

२१९. गाल बजावल - पाखण्ड करना

२२०. गो़ड फुटहा होखल - पैर जलना, कठिन यात्रा

२२१. गिलौरी टपकल - बढ़चढ़ की बातें

२२२. गीत कढ़ावल - गीत शुरूकरना

२२३. गीदड़ कहनी - भयभीत करना, डराना

२२४. गुमान कइल - किसी बात का अमरख/दुःख लगना

२२५. गुमाने फाटल - अति घमण्ड

२२६. गेठरिआवल - हाथ में करना (बहका हुआ माल, अथवा मुफ्त का माल)

२२७. गोईंठा में घीव सुखावल - अपव्यय, जिसका कोई प्रतिफल न निकले

२२८. गोटी बइठल - काम बनना, मेल स्थापित होना

२२९. गोड़ अड़ावल - विघ्न उत्पन्न करना

२३०. गोड़ दबावल - फुसलाना, खुशामत करना

२३१. गोड़ धरिया - जिसका कोई स्वाभिमान न हो

२३२. गोड़ पर गिरल - क्षमा माँगना

२३३. गोड़ परल - याचना करना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

२३४. गोड़ परिया कइल - आरजू, विनती

२३५. गोड़ बढ़ावल - चलने की तैयारी, शुभारम्भ करना

२३६. गोड़ भारी भइल - गर्भवती होना

२३७. गोड़ भुइयाँ ना होखल - छामछूम, अधिक उत्साह, खुशी

२३८. गोड़ में तेल लगावल - आरजू, विनती

२३९. गोड़ रँगल - बेफिक्री, चिंता नहीं

२४०. गोड़ लागल - दंडवत प्रणाम करना

२४१. गोड़ा टाही लागल - आने जाने वालों पर ध्यान रखना

२४२. गोड़े-गोड़े चलल - साथ-साथ चलना

२४३. गोद भरल - गर्भवती होना

२४४. गोद लेहल - अपना बनाना, अपनी संतान बनाना

२४५. गोदी में सुतावल- हृदय के समीप रखना, हृदय से लगाना

२४६. गोदी सुन भइल- निःसंतान होना

२४७. गोबर काढ़ल - सेवा टहल, आश्रित होना

२४८. गोबर गनेस - मूर्ख

२४९. गोबर ढीला भइल - हदस होना

२५०. घटले मने - पूरा मन से नहीं, बिना उत्साह के

२५१. घर आंगन कइल - घरेलू कार्यों का व्यवस्थापन

२५२. घर के दीया - सुपुत्र, सुपात्र

२५३. घर जोगावल - घरेलू व्यवस्था, इन्तजाम, देख-रेख

२५४. घर बइठल - बेरोजगारी

२५५. घर में आग लगावल - किसी को विपत्ति में डालना, परिवार में फूट डालना

२५६. घर में मुसरी पटपटाइल - निर्धनता

२५७. घर हँसावल - बदनामी कराना

२५८. घिचिर-पिचिर - असमंजस

२५९. घिरनाल काटल - छटपटाहट/बेचैनी

२६०. घींच-घांच के - किसी तरह

२६१. घीनाऽ देहल - गलत काम करना, जिससे प्रतिष्ठा का हनन हो

२६२. घीव ले चिकन - अच्छी बात

२६३. घेंट सूखल - कमजोरी, परेशानी, प्यास लगना

२६४. घेरा डालल - बचाव का सभी मार्ग अवरुद्ध करना

२६५. घेरा परल - छापा

२६६. चइतार लागल - मुँह-पेट चलना

२६७. चउकी तूड़ल - आलसी

२६८. चकचूक होखल - झगड़ा

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

२६९. चकवा-चकई भइल

२७०. चतुरबउक - भीतर का होशियार, जिसे लोग बुरबक समझते हैं।

२७१. चमार सियार के दशा - दुर्दिन

२७२. चल देहल - फलां चल देहले, मर गइले, माटी उठ गइल

२७३. चल देहल - मृत्यु

२७४. चलती चलावल - तानाशाही, अपना हुक्म चलाना

२७५. चलनी से पानी भरल - बिना अक्ल के काम

२७६. चहुआ न उठल - दुःख लगना

२७७. चांचर खेलल - (रात भर बहुरिया चाँचर खेलस, दिन में कौआ देख डेरास)

२७८. चाढ़ उतरी कइल - किसी चीज को पाने के लिए अनेक लोगों का प्रयास

२७९. चार लाख के आदमी - बहुत उत्तम व्यक्ति

२८०. चारा ना चलल - विशेष लाभ न होना, कोई उपाय नहीं

२८१. चारों हाथ से - पूरी उदारता, उछाह से

२८२. चालू बनल - व्यर्थ का चालाक बनना

२८३. चिरकुटाही - केंजूसी, छुद्र व्यवहार

२८४. चीलर के चह तूरल - कुतर्क करना, बात का बतंगड़ बनाना, छोटी-छोटी बात को भी तूल देना

२८५. चुटकी देहल - खिल्ली उड़ावल

२८६. चुटकी बजावल - काम को आसान करना

२८७. चुटकी भर - बहुत थोड़ा

२८८. चुटकी लेहल - मजा लेना

२८९. चुल्हा जुटावल - पारिवारिक मेल-मिलाप

२९०. चुस्की लेहल - किसी को फरेब में डालकर मजा लेना

२९१. चूचूहिया बोलल - सुबह होना

२९२. चूल्लू भर पानी में डूबल - निर्लज्जता

२९३. चूल्हा बुताइल - भोजन का अभाव

२९४. चेहरा के पानी गिरल - बशर्म

२९५. चेहरा पर बारे बजल - उदासी, भूख-प्यास

२९६. छक्का छुड़ावल - हरा देना, विजित करना

२९७. छठी के दूध इयाद करावल - परेशान करना

२९८. छतीसा होखल - हम अपने छतीसा हईं, हमरा के जनि पढावऽ

२९९. छह महीनवा - अबोध

३००. छाती उतान कइल - अनावश्यक बहादुरी प्रदर्शन

३०१. छाती काटल - मजा मारना

३०२. छाती कूटल - परेशान करना

३०३. छाती के बाती गिनाइल - दुबला-पतला

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

३०४. छाती चीरल - विश्वास दिलाना

३०५. छाती जुड़ाइल - आनन्द

३०६. छाती टघरावल - बेमुरौवत काम लेना, दबाव डालना

३०७. छाती टघरावल - होश ठिकाने लगाना

३०८. छाती देखावल - बहादुरी का प्रदर्शन

३०९. छाती धड़कल - भय

३१०. छाती धधकल - संशय, भयाक्रान्त

३११. छाती धरावल - दूध पिलाना

३१२. छाती पर पथर रखल - संतोष, कठोर संयम/धैर्य

३१३. छाती पर मसाला दरल - मान मर्दन

३१४. छाती पर मूंग दरल - राड़ कइल, घमंड चूर करना

३१५. छाती पीटल - हाय हाय

३१६. छाती फाटल - असंतोष में दुःख

३१७. छाती फूलल - किसी चीज को पाकर प्रसन्न होना

३१८. छाती मलल - अफशोस

३१९. छाती में मुक्का मारल - हाय हाय करना

३२०. छाती से लगावल - स्नेह

३२१. छान्ह ठेठावल - परेशान करना

३२२. छान्ह पगहा तुड़ावल - बेचैन होना

३२३. छान्ह पगहा तुरावल - बेचैन होना

३२४. छाल छीलल - परेशान करना

३२५. छाल्ही बिछावल - खुशामद करना

३२६. छाव कइल - चोना करना, नखड़ा करना

३२७. छींछ काटल - तेजी से भागना

३२८. छुई मुई होखल - लजाइल

३२९. छुलुक दाल छुलुक भात - साधारण में भी थोड़ा

३३०. छौ-पाँच बतिआवल - छल-कपटपूर्ण बात करना

३३१. छौंड़ा-छउड़ी के खेल - कठिन/गंभीर कार्य को साधारण समझना

३३२. जंगल के बात - लट्ठमार बोली

३३३. जग खानी घर - सुन्दर, लिपा-पुता, साफ-सुथरा घर

३३४. जग हँसाई - बदनामी

३३५. जड़ जीव - हठी

३३६. जम्ह के मातल - ताकत होने पर ऐंठकर चलना

३३७. जय गंगा - कसम

३३८. जर के अंगार होखल - क्रोध में पागल होना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

३३९. जलवइया के छुवल - पिलपिलाह/मरियल लड़का

३४०. जहर उगिलल - तर्कहीन व तथ्यहीन दोषारोपण

३४१. जहर के पूड़िया - अत्यन्त क्रोधी - बिखिआह

३४२. जांगर में घून लागल - निकम्मा आदमी

३४३. जादू के पूड़िया - (इ कनिया बिया कि जादू के पूड़िया), गुणवंती

३४४. जान में जान आइल - संकट से किसी तरह मुक्ति

३४५. जीभ खींचल - गंदे जुबान वाले को डाँटते हुए कहा जाता है- जबान संभाल के बोलऽ, नाहीं त तोहार जीभ खींच लेब

३४६. जीभ पर कन्ट्रोल कइल - सोच समझ कर बोलना

३४७. जेइ से कहलस काका, बूझ गइनी हँसुआ हेरवले बा - सुनते मातर/सुनते ही सँभल जाना, कथ्य का पूर्वानुमान

३४८. झँख मारल - पछतावा

३४९. झांकी पारल - देख-रेख करना

३५०. झांसा देहल - चकमा देना

३५१. झाईं मारल- दिखाई न पड़ना, बिना देखे चलना अथवा बिना सोचे-समझे काम करना

३५२. झाउली पट्टी - फरेबी, गुमराह करना

३५३. झाड़ा पेसाब बन्द कईल - प्रतिबन्ध लगाना

३५४. झूठ के मुँह बसाइल - अत्यधिक झूठ बोलने पर

३५५. टभका मारल - व्यंग्य बोलना

३५६. टाँग अड़ावल - अवरोध डालन

३५७. टाँग पसार के सुतल - निफिकिर

३५८. टेंट बेसाहल - झगड़ा मोलना

३५९. टेंट बेसाहल - झगड़ा का जड़ रोपना

३६०. ठक से ना उपास पड़ल - बिल्कुल उपवास

३६१. ठकुआ मारल - भूल से कोई बात बिगड़ जाने पर

३६२. ठकुर सोहाती - हाँ में हाँ मिलाना

३६३. ठनगन गोपाल - द्रव्य रिक्तता

३६४. ठनठन गोपाल - रिक्त हस्त, अभाव

३६५. ठह तूरल - खूब परिश्रम करना

३६६. ठिकाना लगावल - (बुद्धि ठिकाने लगा देब), औकात बताना

३६७. ठीक कइल - होश में लाना (जबान संभाल के बोलऽ ना त ठीक कर देब)

३६८. ठेठाऽ दीहल - बूरी तरह पिटाई करना

३६९. डंका पीटल - हल्ला मचावल

३७०. डंके की चोट पर - पूरे विश्वास के साथ

३७१. डगरा के बैगन होखल - ना इधर का ना उधर का, अस्थिर

३७२. डाँड़ चमकावल - अपने में किसी को न लगाना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

३७३. डाँड़ टूटल - भारी नुकसान

३७४. डाँड़ी मारल - घट तौली, बेइमानी

३७५. डुग्गी पीटल - प्रचार करना

३७६. डुमरी के फूल होखल - दुर्लभ होना

३७७. डुमरी के फूल होखल - दुर्लभ होना

३७८. डेढ़ अछरी - कम पढ़ा लिखा

३७९. डोम घाउज कइल - अभावजनित असंतोषपूर्ण हल्ला

३८०. डोम होखल - नीच होना, छुद्र कार्य करना

३८१. डोमपाना कइल - नीचता प्रदर्शन, नीच कर्म करना

३८२. डोमा डिगरी कइल - थूका -फजीहत

३८३. डोली फनावल - जबर्दस्ती किसी दूसरे की विवाहिता को अपने अधीन कर लेना

३८४. ढकचल पीली होखल - बेजान, रुग्ण-कृषकाय

३८५. ढाका लेखां मुँह - बड़ा मुँह, हमेशा कुछ न कुछ मांगते रहने की आदत

३८६. ढिंढोरा पीटल - किसी बात को कहते फिरना, गंभीर न रहना

३८७. ढीलल - बढ़ा चढ़ाकर बात करना

३८८. तर ऊपर होखल - अगराइल

३८९. तरवा के लहर कपार पर चढ़ल - अत्यधिक क्रोध

३९०. तरवा चाटल - खुशामद करना, स्वार्थभक्ति

३९१. तरवा सुघरावल - पोल्हावल, मान मनौवल करना

३९२. तरवा से मसल देहल - तुच्छ समझना, अवकात में लाना

३९३. तरह डोलल - हिम्मत हारल

३९४. तरह डोलल - हिम्मत डोलना

३९५. तरहथी पर फोड़ा - विश्वासघात

३९६. तरेंगन गिनल - उपाय न सूझना, असहाय स्थिति

३९७. तसीहा देहल - दुःख देना

३९८. ताज बान्ह के घूमल - तिसमार खाँ बनना

३९९. तारकुन बारजुन होखल - राग-तान न मिलना, असंगत होना

४००. ताल ठोकल - बराबरी कइल, जोर अजमाइस के लिए ललकारना

४०१. तिरजी निकालल - छिद्रान्वेषण

४०२. तिरजी निकालल - बात बढ़ाना

४०३. तीन कउड़ी के होखल - कहीं का अथवा किसी काम का न होना

४०४. तीन में ना तेरह में - कहीं का नहीं

४०५. तीन-तेरह होना - बर्बाद होना

४०६. तेजी देखावल - शान गठना

४०७. तेरह-बाइस कइल - घालमेल, एक में दो जोड़ना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

४०८. तेल लगावल - खुशामद

४०९. तोर-मोर कइल - बात बढ़ावल

४१०. थरिया चमकल - खुशहाल जीवन

४११. थुथुन पर लाठी सहल - काफी धैर्य के साथ किसी के कटु शब्द को बर्दास्त करना, आर्थिक संकट से गुजरना

४१२. दँत कट्टा - स्नेही, एक प्राण दो देह

४१३. दँतचिआर - हँसोड़, अनावश्यक हँसी हँसने वाला

४१४. दँतरस - छोटे शिशु की एक प्रकार की बीमारी

४१५. दम लगावल, साँस लेहल - काम करते-करते थक जाने के बाद थोड़ा आराम करना

४१६. दमी साधल - मत वैभिन्न होने पर चुप लगा जाना/गंभीर होना

४१७. दरबार दिखावल - न्यायालय में भेजना

४१८. दरबार लगावल - बैठकी, समर्थकों का मजमा, श्रेष्ठता का प्रदर्शन

४१९. दरिदर से बैर - व्यर्थ झंझट में पड़ना

४२०. दवाई कइल - मरम्मर करना, ठीक करना (बिगड़ैल व्यक्ति के संदर्भ में)

४२१. दहिना बाँह होखल - विश्वास पात्र होना

४२२. दहिने बहल - किसी से पीछे न रहना

४२३. दही के रही - अधिकई

४२४. दाँत कोठ होखल - खट्टा, अतिप्रिय होना

४२५. दाँत गिरल - बुढ़ापा आना

४२६. दाँत चबावल - अफशोस करना

४२७. दाँत चिआरल - याचना करना (स्वाभिमान को गिराकर)

४२८. दाँत निकलल - प्रचार

४२९. दाँत पीसल - खिसिआइल, क्रोध करना

४३०. दाँत रंगल - बनऽल

४३१. दाँत लागल - मूर्च्छित होना, होश उड़ना

४३२. दाँते अंगुरी पकड़ल - अफशोस करना

४३३. दाना पानी उठल - सेवा-मुक्ति, विदा करना

४३४. दाल के दुलहिन - घी

४३५. दाल-भात के कवर - किसी कठिन कार्य को सहज समझने का भ्रम

४३६. दाल-भात में मूसर चन्द - बीच में बोलने वाला, बिना बुलाये बीच में टपकने वाला

४३७. दिजुआ होखल - गाभिन/गर्भिणी होना, द्विजत्व (श्रेष्ठता) को प्राप्त करना, पुनः उत्पन्न करना

४३८. दिन धइल - काम में आलस्य करना, टालना (इसका तात्पर्य तिथि निश्चित करना भी होता है, जैसे शादी-विवाह, विदाई का दिन निश्चित करना)

४३९. दिन पातर होखल - गरीबी, अभावग्रस्त जीवन

४४०. दिने दिन फुलाइल - ओकर लइका अढ़उल के फूल लेखा दिने दिन फुलाइल जाता, हमार लड़का कपसल जाता।

४४१. दिया बुझल - मृत्यु होना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

४४२. दिल दरिआव - उछाल, उदारता

४४३. दिशा फिरल - पैखाना, फारिग होना, निपटान

४४४. दीअर के बोध - बुद्धू, गँवार

४४५. दुआरी के माटी कोड़ल, दुआर खोनल - बकाये की वसूली के लिए दरवाजे पर बार-बार आना

४४६. दुआरी छेंकल - रास्ता रोकना, किसी चीज के लिए हठ

४४७. दुआरे दुआरे माकल - बिना काम के भ्रमण

४४८. दुखड़ा धनिया कइल - तकलीफ, रो-रो कर बेहाल होना

४४९. दू नाव पर पैर रखल - एक से अधिक धाराओं में बहना, बेमेल कार्यों/सिद्धान्तों को एक साथ साधने का बेमेल/प्रायः कठिन प्रयास

४५०. दूध के धोवल - निष्कलंक (व्यंग्य में)

४५१. दूध में पानी मिलावल - बेइमानी

४५२. दूध लागल (करम लागल) - किसी मृत्यु होने पर एक श्राद्धकर्म

४५३. दूधा के भात रिन्हाइल - मरन

४५४. दूर कौड़ी के होखल - मूल्यवान, अलभ्य

४५५. देह खड़ा होखल - स्वस्थ होना

४५६. देह गिरल - अस्वस्थ, कमजोर होना

४५७. देह डोलल - काफी कमजोर

४५८. देह डोलावल - दौड़-धूप, उद्यम करना

४५९. देह बइठल - थउसल, शरीर से लाचार होना

४६०. देह में आग लागल - अप्रिय, गलत बात सुनकर क्लेश होना

४६१. देह में सटल - अनुराग रखना, हेल-मेल रखना

४६२. देह लगुआर होखल - गर्भवती होना

४६३. दोखड़ल - दो खण्ड करना, खूब पीटना

४६४. दोसरा के माथे खेलल पर माथे फरहार - दूसरे के केंधे से बन्दूक चलाना

४६५. दोस्ती में कुस्ती - दगाबाजी

४६६. दौरी में डेग डालल - धीमी गति

४६७. धमिन पोंछ - कायर

४६८. धरती के आस - अपनी हैसियत पर भरोसा

४६९. धरती गढ़ू होखल - परिस्थिति कठिन होना

४७०. धरती पर गोड़ ना होखल - उमंग

४७१. धोती खोंटल - लड़ने की तैयारी, झगड़ा-फसाद पर उतारूहोना

४७२. धोवल धोबी - केंज़ूस

४७३. नकबइठा - नकचिपटा, नीचा

४७४. नकबासा - मोटा छिद्र

४७५. नकलोल पकड़ल- सिकेंज्जे में करना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

४७६. नकवाहिन - तहस-नहस

४७७. नखड़ा कइल - हिल्ला हुज्जत (दिवावे में इनकार, मनौव्वल कराना)

४७८. नजर-गुजर - जोग-टोन

४७९. नजरियावल - कुदृष्टि डालना

४८०. नबाव के नाती - फुटानी उड़ाने वाला

४८१. नरकों में ठेला ठेली - कहीं सुख नहीं

४८२. नरी खींचल - देह से बेकार कइल

४८३. नव-छव (नव जानेली छव ना जानेली) - बात छुपाना, अबोध बनने का प्रयत्न

४८४. ना हिनुए में ना तुरुके में - कहीं का नहीं

४८५. नाँव गाँव कइल - इज्जत लुटाना, बदनामी कराना

४८६. नाक काटल - इज्जत लूटना

४८७. नाक के नकटी - बेकार, तुच्छ

४८८. नाक के नकबेसर होखल - प्रिय होना

४८९. नाक के बाल - अति प्रिय

४९०. नाक ना देहल - अति दुर्गन्ध

४९१. नाक फरकावल - अस्वीकार (आक्रोश में)

४९२. नाक मूनल- घृणा करना

४९३. नाक सुरुकल - अनमना (मन न लगाना)

४९४. नाक सेकुरावल - अनिच्छा, पसंद न करना

४९५. नाकोदम कइल - परेशान करना

४९६. नागा न होखल - लगातार

४९७. नाच नचावल - परेशान करना

४९८. नाना गड़मड़वा सुन - कुछ न समझना

४९९. नाम पर कुत्ता पोसल - तौहीनी करना

५००. निछतरी आदमी - प्रतापी, पुरुषार्थी

५०१. निझारल बात - स्पष्ट बात

५०२. निरदन - लापरवाह

५०३. नेटुआ के भात रीन्हल - नौ नौ दुर्दशा, कहीं का न रह जाना

५०४. पँवड़ के पावल - खूब देख सुनकर

५०५. पंथ में पाकड़ - मदद करने वाला

५०६. पँवारा नाधल - किसी बात को अनावश्यक तूल देना, तिल का ताड़ बनाना

५०७. पइसा के मुंह फूटल - लक्ष्मी का आगमन

५०८. पइसा फेरल - जवाब देहल, जो काम लिया, वह न हो पाना

५०९. पकपकाइल - व्यर्थ का बकवास

५१०. पखेव फेंकल - मृत को किनारे लगाना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

५११. पगड़ी उतारल - झुकाना, प्रतिष्ठा को गिराना

५१२. पचलत्ती बोलल - बहिष्कार करना

५१३. पटरी बइठल - मेल-जोल

५१४. पटुआइल - चुप लगा जाना, उत्साह हीनता

५१५. पत्तल चाटल - कुत्ते की दशा, दरिद्रता की दशा

५१६. पनिगर - तेज (बैल पनिगर बा)

५१७. पपीहरा होखल - अतिशय परेशानी, बेचैनी

५१८. परतर कइल - देखादेखी, बराबरी करना

५१९. परता परल - वाजिब लगना

५२०. परथाव देहल - दृष्टान्त देना

५२१. परलोक देखल - भला-बुरा का ख्याल

५२२. पसंगों में ना होखल - किसी तरह तुलना नहीं

५२३. पहाड़ा पढ़ावल - अधिक चालाक बनना, उल्लू बनाना, भरमाना

५२४. पहुँचा पकड़ल - हक अंदाय वसूल करने के लिए किसी के इज्जत का ख्याल न करना

५२५. पाँख होखल - होशियार, समझदार होना

५२६. पाँव पर - दरे पर

५२७. पाँव पुजाई - दक्षिणा

५२८. पाँव पूजल - सम्मान देना, श्रेष्ठ समझना

५२९. पाँव भरल - थक जाना

५३०. पाँव लागल - प्रणाम

५३१. पाछ देहल - टोना करना

५३२. पाद ढेकार बन्द कइल - अधीन करना, स्वतंत्रता छीनना

५३३. पानी उतरल - प्रतिष्ठा पर आँच, शर्मिंदगी

५३४. पानी उतारल - इज्जत गिराना

५३५. पानी के जगह खून बहावल - निष्ठापूर्वक नमक हलाली

५३६. पानी के बुलबुला - क्षणिक

५३७. पानी छानल - (निकसारी होने पर एक प्रकार टोटरम)

५३८. पानी जोगावल - इज्जत रखना

५३९. पानी परल - घाटा, तहस-नहस

५४०. पानी पीटल - व्यर्थ का काम

५४१. पानी भरल - सेवा-टहल करना

५४२. पानी में आग लगावल - ज्यादती, जोर जबर्दस्ती

५४३. पानी में पड़ल - व्यर्थ, नुकसान

५४४. पानी में पथर गलल - असंभव को संभव करने का व्यर्थ प्रयास

५४५. पापड़ बेलल - झूठ साँच मिलावल

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

५४६. पाम्ह आइल - नौजवानी की पहली छाप

५४७. पार उतरल - सफल होना

५४८. पार न पावल - असफल प्रयास, सफल न होना

५४९. पारा चढ़ल - क्रोध चढ़ना

५५०. पाल खाइल - लंघाइल (गाय, भैंस)

५५१. पालिसी दागल - व्यंग्य में खुशामद

५५२. पिंगल पढ़ल - मीठ वचन, मघुरी वाणी

५५३. पिण्ड छुड़ावल - हर्ज-मर्ज सहकर मुक्त होना

५५४. पीठ ठोकल - शाबासी देना

५५५. पीठ देखावल - मैदान छोड़ना, समर्पण

५५६. पीठ देहल - मदद देना

५५७. पीठ पर हाथ दहल - सहायता करना

५५८. पीठ पीछे - आड़ में, अप्रत्यक्ष

५५९. पीठ पूजा - प्रशंसा, बाहबाही लूटना

५६०. पीठिया ठोक - समकक्ष

५६१. पीठी में धूर लगावल - छकाना, पछाड़ना

५६२. पुतला जरावल - घोर विरोध, बेइज्जती

५६३. पुतला होखल - भोला भाला बनना

५६४. पुनिया कइल - बोहनी बाटा करना

५६५. पुर-पुर पादल - डर, भय

५६६. पुरधाइन बनल - अपने मन होशियार, प्रधान बनना

५६७. पेंड़ा जोहल - इन्तजार करना

५६८. पेट काटल - खान-पान में केंजूसी

५६९. पेट के बात - गुप्त बात

५७०. पेट गिरल - गर्भपात

५७१. पेट जरावल - अधपेटा खाइल, अल्पाहार

५७२. पेट ढीला होखल - हदस, भय

५७३. पेट दाग के सुतल - उपवास करना, भूखे रह जाना

५७४. पेट देखावल - केंगाली का प्रदर्शन

५७५. पेट धोवल - गुप्त बात को जानने का प्रयास

५७६. पेट निकलल - अधिक सुकुवार

५७७. पेट पर रहल - भोजन पर रहना

५७८. पेट पर लात मारल - जीविका छीनना

५७९. पेट पहाड़ भइल - भोजन के लिए परेशान

५८०. पेट पातर होखल - पेटझरी, गंभीर न रहना, कोई बात छुपा न पाना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

५८१. पेट पोछुआ लइका - अन्तिम संतान

५८२. पेट पोसल - सिर्फ भोजन पर ही संतुष्ट

५८३. पेट पोसुआ - जिसको अपने पेट की ही चिन्ता हो

५८४. पेट फूलल - कब्जियत

५८५. पेट मधवा - अधिक खाने वाला

५८६. पेट में चूहा कूदल - भूख लगना

५८७. पेट में ना पचल - गोपनीय न रख पाना

५८८. पेट में बग्धा लागल - उद्वेग, बेचैनी (भोजन के लिए)

५८९. पेट रहल - गर्भ रहना, ठहरना

५९०. पेट सेंकल - उपवास करना, भूख बर्दास्त करना

५९१. पेट-पीठ सटल - भोजन मयस्सर न होना

५९२. पेटक्कर - भुक्कड़

५९३. पेटे पर - सिर्फ भोजन पर

५९४. पैजामा के बाहर होखल - अधिक नाराज होना

५९५. पोंछ हिलावल - चमचई, भयवश खुशामद करना

५९६. पोंछीटा खोलल - इज्जत लेहल

५९७. पोंछीटा ढील होखल - डर हो जाना

५९८. पोट-पाट के - भरमा फुसलाकर

५९९. पोटल - बहकावल, फुसलाना

६००. पोल खुलल - गोपनीयता भंग होना

६०१. फजीहत में पड़ल - जंजाल में पड़ना

६०२. फटक के लेहल /फटक के दीहल - हिसाब में स्पष्ट व्यवहार

६०३. फर पर चढ़ल - कोर पर चढ़ल, घरी पेर के लेआइलबा

६०४. फहा-फही - उछाह

६०५. फींका पड़ल - हताश/निराश होना

६०६. फींचना में पड़ल - झंझट में फँसना

६०७. फुटहा दुलम होखल - भीषण गरीबी, तरसना

६०८. फुटहा फांकल - अति निर्धनता

६०९. फुरगुदी चिरैया होखल - चंचल, तेज होना

६१०. फूल के डुम्हा होखल - नाराज होना

६११. फेर में पड़ल - चक्कलस/उलझन में फेंसना

६१२. फोंफ काटल - निर्द्वन्द्व, बेफिक्र होकर सोना

६१३. बँडेरी के बाती गिनल - असमंजस, कुछ समझ में न आना

६१४. बउआइल चलल - विघ्न अथवा अभाववश विवेकहीनता, बावला होना

६१५. बढ़नी से मारल- बेइज्जत करना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

६१६. बतासे धावल - आभास मात्र से दौड़ पड़ना, अनुमान पर, बिना विवेक के काम

६१७. बनल - धमंड करना, अपने में न लगाना

६१८. बभन गेठरी - जोहि राम सोहि राम, भीख मंगई

६१९. बल धकेल - जबर्दस्ती

६२०. बहँगी से पानी पटावल - बेमन से काम करना

६२१. बहुरिया भइल - सामने आने में शर्माना,

६२२. बाँस के जरी रेंड जामल - कुल-खानदान के अनुकूल संतान का न होना, बेमेल

६२३. बांस चढ़ल - बहकावे में बुद्धिहीन का प्रदर्शन

६२४. बाइ मारल - लकवाग्रस्त होना, अपंगता

६२५. बाघ भइल/बघेला होखल - जारी चलावल, बेवजह भिड़ते रहना

६२६. बाजा बजावल - जग हँसाई

६२७. बात उठल - विश्वास खोना

६२८. बात के बात में - तत्काल, शीघ्र

६२९. बात के सिअल - गुनना, सिद्धान्त पर दृढ़ रहना, विश्वास करके चलना, किसी विचार पर अमल करना

६३०. बात छिलल - बतकूचन, बाल का खाल निकालना

६३१. बात देहल - विश्वास दिलाना

६३२. बात पेट में राखल - कोई खास बात गोपनीय रखना, ताकि समय पर काम आवे

६३३. बात बनावल - झूठ साँच जोड़ना

६३४. बात राखल - इज्जत करना

६३५. बानर के दशा - बिलाला स्थिति, उपेक्षित दशा

६३६. बालू पेरल - निरर्थक, बेअर्थ का श्रम

६३७. बावाजी के बाछी- निरीह प्राणी

६३८. बिख ठाँय-ठाँय - कटु वचन

६३९. बिजे में हीज्जे - हुज्जत करना, ठानना, हठ करना

६४०. बिना खसम खेती - दूसरे के भरोसे

६४१. बिना पेंदी के लोटा - अस्थिर चित्त/ अस्थिर बुद्धि का व्यक्ति

६४२. बिना पोंछ के भेंड़ - मूर्ख

६४३. बिना मेंह के दौनी - अगुआ रहित, असंगठित प्रयास

६४४. बिपत होखल - कष्टकारी होना

६४५. बेंवत बइठल - व्यवस्था न हो पाना (बेंवतउऔकात, आर्थिक स्थिति)

६४६. बेगारी टालल - बेमन से काम करना

६४७. बेटी-रोटी कइल - झगड़ा तकरार

६४८. बेलना बेलल - गुपचुप साजिश रचना

६४९. बेलौग कइल - बेइज्जत करना

६५०. बोकला छोड़ावल - उमक, ऐंठन छेड़ाना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

६५१. बोली बोलल - व्यंग्य करना

६५२. भगल बनावल - बात बनाना, ढोंग करना

६५३. भगही ढील होखल - भय होना

६५४. भर मुँह माटी होखल- दण्ड पाकर होश में आना

६५५. भाँट होखल - अधिक और बिना अर्थ का बकवास

६५६. भाग मनावल - असंभव का संभव होने पर प्रसन्न होना

६५७. भाठा बइठल - काम चौपट होना, गंभीर घाटा होना

६५८. भाव बढ़ल - अपने में किसी को न लगाना

६५९. भाव बनावल - नखड़ा करना

६६०. भाव बनावल - स्वांग रचना, इतराना

६६१. भींगल बिलाई होखल - निहायत डरपोक

६६२. भीखों मांगे के लूर ना - निरा मूर्ख

६६३. भीतर के माहुर - जहर के पूड़िया

६६४. भुभुन पर लाठी आड़ल - अभाव में कठोर संघर्ष

६६५. भूत सवार होखल - बावला होना

६६६. भूत-बैताल हाखेल - किसी काम के पीछे अति परेशान

६६७. भोम्ह लोटल - ठिकाना नहीं (अभवग्रस्तता)

६६८. भौं छिलल - इज्जत उतारना

६६९. भौं तानल - क्रोधित होना

६७०. मइल छोड़ावल - घमंड तूरना

६७१. मकरी के जाल - सांसारिक प्रपंच, जंजाल

६७२. मछरी के बेंच - कौड़ी के भाव, कौड़ी के तीन

६७३. मन मइल कइल - दुःखी, दुर्भावनाग्रस्त होना

६७४. मन में गड़ल - जंचना, पसंद आना

६७५. मन में छव-पाँच - छल-कपट

६७६. मन में धइल - प्रतिज्ञा, संकल्प करना, कोई निश्चय हमेशा याद रखना

६७७. मन सवा चालीस होखल - कुछ पाने की लालसा

६७८. मन हरिहर होखल - खुशी, चिन्ता से मुक्ति

६७९. मर-मर के - काफी परिश्रम के साथ

६८०. मरला पर लाठी पीटल - वीरता का झूठा प्रदर्शन

६८१. मर्दन मरोरल - अहित करना

६८२. मल हगल - कठिनाई से मुक्ति का प्रयास (इ मल हगले से निकली)

६८३. महीन कातल - बारीकी से बात, चतुराईपूर्ण मधुर बातचीत

६८४. महोखा बनल - किसी की कमजोरी का नाजायज फायदा उठाने की चेष्टा (इ बिलाई बने गइली उ महोखा न गइले)

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

६८५. माँग मांगल - बरदान, आशीर्वाद मांगना

६८६. माँग में दिया बारल - (अपशब्द) अहित करना, सुहाग छीनना

६८७. माछी मारल (कोढ़ी के देवता) - निखट्टू, अकर्मण्य

६८८. माटी उठल - मृत्यु

६८९. माटी के मूरत - बेकाम के, घोंघा बसंतू

६९०. माटी घिनावल - शिकायत कराना

६९१. माटी मिलल -(गाली, श्राप) - बेकार नुकसान होना (तोहार माटी मिलो, सब कइल-धइल माटी मिल गइल)

६९२. माथ झुकल - बेइज्जत होना

६९३. माथ पर चढ़ावल - अधिक प्रश्रय देना, अधिक दुलार करना

६९४. माथ पर हाथ धइल - कुफ्फुत, दुःख, अफसोस, पाश्चाताप करना

६९५. माथा खउक होखल - परेशानहाल होना

६९६. माथा खाइल (दीमाग चाटल) - असचिकर बात करना

६९७. माथा चढ़ल - छोटी मुँह बडी बात, सहक कर बात करना, बढ़चढ़ कर बात करना

६९८. माथा ठनकल - भूल-चूक का एकाएक ख्याल आना

६९९. माथा धूमल - समझ में न आना कि क्या करें

७००. माथा पटकल - भाग्य को रोना

७०१. माथा पीटल - कुछ लुटने या खो जाने का गम

७०२. माथे खेलल - दूसरे के केंधे से बंदूक चलाना

७०३. माथे मउर चढ़ल - भाग्य चमकना, सौभाग्य जागना, विवाह होना

७०४. मामा के अंगुरी दांते काटल -

७०५. मारल-मारल फिरल - असहाय, उपेक्षित होना

७०६. माहुर कूचल -क्रोध में जलना किन्तु कुछ न कर पाना

७०७. मुँह के बात छीनल - (यही तो मैं कहना चाहता था, तू ने पहले ही कह दिया)

७०८. मुँह चाटल - (सीधा के मुँह कुत्ता चाटे)

७०९. मुँह चुमौवल - अत्यधिक स्नेह

७१०. मुँह डेढ़ कइल - अनिच्छा, घृणा, तवज्जो न देना

७११. मुँह ताकल - जवाब न सूझना, विस्मित होना, परमुखापेक्षिता

७१२. मुँह देखल (बात) - पक्ष लेकर बात करना (दो आदमी के बीच वार्ता में तीसरे का शक्तिशाली की ओर से हाँ में हाँ मिलाना, सच्चाई छुपाकर)

७१३. मुँह धोवा - जिसकी बात का कोई महत्व न दे, प्रभाव न पड़े

७१४. मुँह निहारल - बेमतलब का समय बर्बाद करना (किसी के सामने खड़ा होकर या बैठकर, अथवा कुछ पाने की लालसा में)

७१५. मुँह पर - सामने, प्रत्यक्ष, तत्काल

७१६. मुँह पर बोलल - स्पष्ट, साफ-साफ बात करना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

७१७. मुँह पुरौवल - किसी के सामने किसी की बात का समर्थन करना, सहमति व्यक्त करना, साख स्थापित करना (नइखऽ मानत त फलां से भी पूछ लऽ)

७१८. मुँह पेट चलल - कय-दस्त

७१९. मुँह फुलौवल - रूष्टं-तुष्टं

७२०. मुँह फेरल - मुख मोड़ना

७२१. मुँह माटी उठावल - होश आना - एहिसन मारबे की मुँह माटी उठा लेबे।

७२२. मुँह में जाब लागल - न बोलना, न खाना-पीना

७२३. मुँह में फूल-खाँड़ परो - आशीर्वाद

७२४. मुँह में माछी पड़ल - काम में विघ्न

७२५. मुँह लगल -संचिकर लगना, किसी विशेष खाद्य-पेय पदार्थ के प्रति अधिक आशक्ति

७२६. मुँह लटकावल - निराश, दुखित, उदास होना

७२७. मुँह लागल (तत्काल) - (मुँहें लागल कहनीं कि इ काम मत करऽ, बाकिर मानली नाही), का उनका मुँह लागल बाड़ू ? छोड़ऽ हटावऽ जाये दऽ)

७२८. मुँह लाल भइल - क्रोध होना

७२९. मुँह लेवर के राखल - चुप्पी लगाकर रहना

७३०. मुँहा ठुट्टी - बाता कहनी

७३१. मुखड़िए गिरल - गहरा धक्का लगाना, कचोट

७३२. मुठिआइल - अपने हाथ में करना

७३३. मुठ्ठी कड़ा कइल - केंजूसी, नाप-जोख के खर्च

७३४. मुठ्ठी बान्हल - खर्च के मामले में संयम बरतना

७३५. मुड़ी उठावल - ध्यान देना

७३६. मुलम्मा देहल - झूठी प्रशंसा

७३७. मुसमात होखल - कायरपन

७३८. मूदल बिलाई होखल- मौके की तलाश में चुप्पी साधना, छुपे रूस्तम

७३९. मेधा मेटावल - औपचारिका का निर्वाह

७४०. मेहर भगता - इज्जत चोर

७४१. मोंछ अइंठल - शान गठना

७४२. मोंछ उखाड़ल - शान में बट्टा लगाना

७४३. मोंछ ऊअर होखल - प्रतिष्ठा बढ़ना

७४४. मोंछ के लड़ाई - प्रतिष्ठा की लड़ाई

७४५. मोंछ नीचे कइल - शर्म से गड़ना

७४६. मोंछ नीचे होखल - इज्जत का हनन

७४७. मोंछ पर ताव फेरल - काम बनने पर गर्व करना, प्रसन्न होना

७४८. मोंछ मुड़ावल - स्वाभिमान गिराना, संकल्प या दिया गया जुबान पूरा न होने पर (देख लीहऽ, उनका के दंगल में ना पटक देहनी, त आपन मोंछ मुड़ा लेब)

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

७४९. मोंछ में घी लगावल - उन्नति का उमंग

७५०. रसगुल्ला छील के खाइल - अतिवादिता

७५१. रसगुल्ला से मार-पीट - उछाह, खुशी, उमंग

७५२. राई-छाई होखल - बेकार, व्यर्थ हो जाना

७५३. रात के अंजोरिया होखल - सुन्दर स्वभाव, नैराश्य में आशा का संचार करना

७५४. राम कहऽ - कर्महीन, भाग्य भरोसे रहना

७५५. राम जाने -निफिकिर

७५६. राम भरोसा - बेफिक्र

७५७. रास्ता पर आवल - सही मार्ग, सुमार्ग पर आना

७५८. रिगिर कइल - हिल्ला हुज्जत करना, किसी चीज के लिए हठ, जैसे लेमनचूस के लिए कोई बच्चा अपनी माँ से रिगिर करता है, माँ के पास पैसा नहीं है; बच्चे को क्या पता, ऐसी स्थिति में उसका हठ 'रिगिर करना' कहा जायेगा।

७५९. रेख उठान - जवानी

७६०. रेत जोतल - व्यर्थ के काम, निष्फल कार्य

७६१. रोदना पसारल -घड़ियाली आँसू बहाना

७६२. लंका के बढ़नी - बदमास औरत, एक घर की बात दूसरी जगह बता कर लड़ाने वाली

७६३. लकीर खींचल - कसम खाना, प्रतिज्ञा करना

७६४. लगुसी से घास टारल - बिना मन का कार्य करना

७६५. लछमिनिया घर - सौभाग्यशाली घर/परिवार

७६६. लट्टा लगावल (लट्टा कूटल) - झगड़ा लगाना

७६७. लतरी-दहिनी बरल - झगड़ा लगाना

७६८. लतरी-दहिनी बरल - झगड़ा लगाना

७६९. लांग लूटल - बेइज्जत करना

७७०. लाज घोर के पीअल / नजरी के पानी गिरल - बेशर्मी का प्रदर्शन

७७१. लाठी के हाथे बात - उदंड़ता, जोर जबर्दस्ती वाली बात

७७२. लाठीं ठेंगल - बुढ़ापा

७७३. लामी लेहल/ लामी मारल - भाग खड़ा होना

७७४. लिखल - भाग्यरेखा, संयोग (लिखलका कहीं बांव ना जाई)

७७५. लीप पोत के बराबर - साक्ष्य मिटाना, तहस-नहस होना/करना

७७६. लेना के देना पड़ल - आशा के विपरीत कार्य होना

७७७. लेवर के धइल - यत्न के साथ सुरक्षा, जोगाकर रखना, संचित करना

७७८. लोहा लगल - रण-क्षेत्र में आमना सामना

७७९. लोहा लेहल - मोर्चा लेना

७८०. लोहू घोंट के रहल -क्रोध को दबाना

७८१. लौका-बिजली होखल - अस्थिर, बेचैन

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

७८२. सटक सीताराम - छुप जाना, मौके से भाग खड़ा होना

७८३. सढ़ेसाती चढ़ल - सनक, विनाश की घड़ी

७८४. सतुआ पर पंखा हौंकल (टिपोल) - पाखण्ड करना

७८५. सनीचरा लागल - परेशानी में पड़ना

७८६. सपना के संपत - दुर्लभ, अलभ्य

७८७. सपना देखल - कल्पना करना, ख्याली पुलाव पकाना

७८८. समुंदर सोख - पागल, सनकाह

७८९. सरधा बुतावल - आकांक्षा की पूर्ति

७९०. सरधा में गरदा उड़ल - इच्छा पूरा न होना, प्रयास में विघ्न आना

७९१. साँप छुछुनर के दसा - कुछ कहा अथवा किया न बने, त्रिशंकु स्थिति

७९२. सिकहरा चढ़ल - उमकना, किसी के बहकावे में उमंग होना

७९३. सिखा-पढ़ा देना - बहकाना, अपने पक्ष में करना

७९४. सियाार फेंकरल - कुहराम, अपसगुन

७९५. सुअर के जिनगी -लू-लू-छू-छू, दुःख, दारिद्र्य

७९६. सुखले गंगा हेलल - सफेद झूठ

७९७. सुखले गरई पकड़ल - आधारहीन बात या बेतुका कार्य

७९८. सुतरी के गिरह में पड़ना - जंजाल में फेंसना

७९९. सुथनी निकिआवल - व्यर्थ का काम करना

८००. सुरुज के दिया देखावल - आत्मज्ञान न होना, छोट मुँह बड़ी बात

८०१. सेर पर सवाई - एक से बढ़ के एक

८०२. सोरहो आने - पूर्णस्प्रेण

८०३. हंडिया में लेवा दहल -

८०४. हरवाह-चरवाह के जिन्दगी - बदतर स्थिति

८०५. हराम के पइसा - नाजायज आमदनी

८०६. हलफ लीलल - (क्रिया), सफेद झूठ बोलना

८०७. हवा खराब होखल - स्थिति प्रतिकूल होना

८०८. हवा खाइल - खुली जगह में टहलना या बैठना, शुद्ध वायु सेवन

८०९. हवा दिहल - समस्या को जटिल बनाना, सहकाना

८१०. हवा से बात कइल - तर्कहीन बात, ती चाल

८११. हवा होखल - सारी सोच बेकार

८१२. हाड़ में हरदी लागल - (विवाह)

८१३. हाथ उठाई - दूसरे के भरोसे, दूसरे के आसरे

८१४. हाथ उठावल - प्रणामापाती, मारने के लिए हाथ बढ़ाना

८१५. हाथ खाली होखल - अभाव

८१६. हाथ खींचल - अलग होना (किसी कार्य से)

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

८१७. हाथ गोड़ तूर के पड़ल - जी जान से भिड़ जाना

८१८. हाथ गोड़ तूर के बइठल - बेकारी

८१९. हाथ चलावल / हाथ छोड़ल - मारना, पीटना

८२०. हाथ दबावल - ईशारा करना

८२१. हाथ धरावल - जीवन संगी बनाना

८२२. हाथ पर ना उठल - सोम्हई, केंजूसी

८२३. हाथ पर हाथ रखल - कर्महीन होना

८२४. हाथ फेरल - हड़पना

८२५. हाथ बांह धरावल - सम्बन्ध जोड़ना, सुपूर्द करना, विवाह करना

८२६. हाथ मुड़ी पर रखल - वरदान देना

८२७. हाथ में दही जामल - किसी काम से जी चुराना, बहाना बनाना

८२८. हाथ में ना आइल - असफल प्रयास, बहक जाना

८२९. हाथ में भइल - काबू में आना, अधीन होना

८३०. हाथ लगावल - सहारा देना

८३१. हाथ लागल - कोई बहका हुआ या बहकने वाले चीज का मिल जाना

८३२. हाथ साफ कइल - सीखना, प्रशिक्षण लेना

८३३. हाथ सिकस्त होखल - कठिनाई, अभावग्रस्तता

८३४. हाथी के कान्ह पर होखल - सौभाग्य वृद्धि

८३५. हाथी पर ना लदाये वाला बात - ऐसी बड़ी बात, जिसपर यकीन करना कठिन हो

८३६. हिंग से हर्रे ले - सबकुछ

८३७. हुक्का चिलम बन्द कइल - आने-जाने पर प्रतिबन्ध

८३८. हुलसाह माटी - उपजाऊ विकासशील, उत्साही

८३९. हेंकड़ी गुम होखल - होश गायब होना

८४०. हेंगावल - शान्त कइना, मिटाना

८४१. हेंगावल - इज्जत उतारना

८४२. होम-जाप कइल - बचाव का उपाय करना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.